भगवत् कृपा

स्वामी नारायण

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम्। विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 37 अंक : 6 | 26.11.2014 बुधवार (नवंबर - दिसंबर) | शुल्क – प्रति अंक : ₹ 20.00 वार्षिक : ₹ 100.00

वार्षिक स्नेहमिलन पर नए वर्ष के शुभाशीष...

...हर साल की अपेक्षा इस बार यहां सूना-सूना लग रहा है, क्योंकि मुंबई-अमदाबाद के हमारे जो मुक्त हर साल आते थे, वे अबकी नहीं आ पाए। सो, मन में एक सूनापन-सा लगता है। पर, दूसरी ओर यह सही भी हुआ है। क्योंकि–आप जानते हो कि **हमें भीड़ इकट्ठी नहीं करनी, कुटुंबभाव से जीता हुआ एक समाज चाहिए।** इसलिए वे नहीं दिखाई पड़ते, यह एक तरीके से अच्छा ही है। हमें भीड़भाड़ तो चाहिए नहीं। 'संप, सुहृद्‌भाव, एकता'–अपनेपन से, मिल-जुलकर रहने वाला अपना एक परिवार चाहिए–संयुक्त कुटुंब चाहिए। मानता हूँ कि एक जॉइन्ट फॅमिली में बर्तन खटकते भी हैं, लेकिन योगीजी महाराज की कही एक बात के मुताबिक हम बात को हद्द से ज़्यादा बढ़ा न लें। वे कहते थे–**तीन प्रकार** की लकीर होती है।

एक–**पानी में लकीर**, जहां उंगली से लकीर बनाते जाएँगे, तो पीछे-पीछे वो लकीर मिटती जाती है। अपने आप रब आउट हो जाती है।

दूसरी–**आटे पर लकीर**। जब तक उसे रब आउट न करो, वो इम्प्रेशन बनी रहती है। पर, हाथ फेरने से वो मिट जाती है।

और तीसरी– **लोहे पर लकीर**। हम इतनी हद्द तक न जाएँ; जो मिटती ही नहीं।

काकाजी के साथ जुड़े हुए समाज में जल में लकीर होनी चाहिए, जहां ऑन धी स्पॉट भूल जाएँ। पकड़ कर क्यों बैठें हम? नए साल का यह मेरा मॅसेज समझो या जो समझो। अगर हम यह नहीं कर पाते हैं, तो जैसे भद्रायुभाई ने बताया कि हमने सत्संग को समझा ही नहीं है। **सत्संग यानि–'मुक्तों से आत्मबुद्धि और प्रीति'!** गुणातीतानंदस्वामिजी के समय से यह सुनते आए हैं। आपने भी सत्संग में यह कितनी बार सुना होगा कि भगवान के भक्तों में 'आत्मबुद्धि और प्रीति'-वही सत्संग है। लगातार धुन-भजन, पूजा-पाठ के कर्म-कांड करा करना या सिर्फ कथा व भजन में - जगराते में जाकर बैठना –वो सत्संग नहीं है। यह नहीं करना है,

ऐसा नहीं है। पर, जैसे अपने कुटुंब से आत्मीयता और अपनापन है, वैसा भगवान के भक्तों के प्रति रखना। हाँ, जब यह बात करते हैं, तो **हमारे कुटुंब के अंदर भी 'एकता' होनी चाहिए-संप होना चाहिए।** इतना सत्संग करने के बाद अगर दो भाई एक-दूसरे से अड़ जाते हैं, इसका अर्थ यह है कि 'सत्संग' को वे समझे ही नहीं हैं।

काकाजी इसे अलग ढंग से कहते थे–**'सत्संग यानि सत्पुरुष'।** मतलब–सत्पुरुष हमारे जीवन के सेंटर में रहे। हम हमारे इज़म, मान, प्रेस्टीज़ इश्यु, एग्ज़ीस्टेन्शियल एवरनेस में न रहें। यह बात खूब गौर से समझें कि **हमें चीला-चालू सत्संग नहीं करना है। हमें ऐसे साधु के साथ ही बंधे रहना है। पप्पाजी** ने एक बार कहा था– ***'बंधावानुं छे संतमां, कोई संस्थामां पण बंधावानुं नथी'।*** कितनी हद्द तक पप्पाजी ने बात कर दी! वे यहां तक बोले–**'संस्था तो गाजरनी पीपुड़ी छे'।** मकई के कोन में आइसक्रीम भर कर छोटे बच्चों को देते हैं, ऐसी बात है यह। जब तक उसमें से आइसक्रीम खा सकते हैं, वह खा लो और फिर बाकी का फेंक दो या चबा लो। तो, हम खूब निश्चय करके जाएँ कि हमें ऐसे किसी गलत कदम या उस दिशा में जाना नहीं है।

देखो, यह बात कितनी इम्पोर्टन्ट होगी। यहां से **स्वामिजी** को गए हुए कितना टाइम हुआ? एक वीक या दस दिन मॅक्सीमम हुए होंगे! कल दोपहर को उनका फोन आया और कहा–

जनवरी के फर्स्ट वीक के बाद मैं दिल्ली आ रहा हूँ। अशोकविहार में पांच दिन तेरे साथ रहूंगा। आप लोग भी कितने खुश हो गए! कल से मेरा मन भी फूला नहीं समाता था। मैंने आज सुबह-सुबह ही कहा–*कल* ***हमारे लिए तो सोने का सूरज उगा, मोती की बारिश हुई।***

स्वामिजी ने जब कहा– *पांच दिन तक।* तो, मैंने पूछा–*स्वामी, सच में!*

स्वामी बोले–*काम है, मुझे पुस्तक लिखनी है–**'संप, सुहृद्‌भाव, एकता'**। योगीजी महाराज, काकाजी और पप्पाजी के ऐसे अनपैरलल प्रसंग हों, वो तू भी सोच कर रख और मैं भी सेट करके आता हूँ। हम वहां लिखेंगे।*

स्वामी जानते थे कि मुकुंद मेरी यह बात सही मानता नहीं है कि– ***'मैं आने वाला हूँ, मतलब आने वाला हूँ।'***

सो वे बोले– *तू यह मत समझ कि मैं नींद में बोल रहा हूँ।*

मैंने कहा–*स्वामी आप तो नींद में नहीं बोल रहे, लेकिन खुले दिल से कहता हूँ कि मुझे ऐसा जरूर लग रहा है कि मैं नींद में हूँ और सपने में आपकी बात सुन रहा हूँ।*

स्वामी हंस पड़े। देखो, यह कितनी खुशी की बात है।

स्वामी इसलिए आ रहे हैं कि उन्हें ग्रंथ लिखना है–**'संप, सुहृद्‌भाव, एकता'** पर। मतलब–वो **कितना गहन विषय होगा, जो आज 80 साल की उम्र में स्वामी यह कह रहे हैं कि मुझे ये ग्रंथ लिखना है!** तुम मेरी यह बात समझो और इस प्रिंसीपल पर चलने लग जाओ। हमें और कुछ नहीं करना है। एक ही चीज़ रखनी है। सब एक होकर रहो। एकता से रहो।

...भगवान स्वामिनारायण ने वाकई अनपॅरलल आशीर्वाद दिए हैं। मैं कई बार कह चुका हूँ कि कोई भी ऐसा संप्रदाय, मंदिर, संस्था, धर्म लेकर आओ और मुझे बताओ जहां परंपरा कन्टिन्यूअस रही हो। हाँ, इलेक्शन्स हुए होंगे या सिलेक्शन से किसी को गद्दी पर बिठा दिया होगा। एक बार ऐसी कोई समर्थ चेतना झबुकी होगी और सेंकड़ों सालों के बाद ऐसी कोई दूसरी चेतना वहां प्रगट हुई होगी। लेकिन, कन्टिन्यूइटि नहीं रही होगी, रह भी नहीं सकती। यह है **स्वामिनारायण की सर्वोपरिता कि इन्होंने मानवस्वरूप में दीए से दीया अखंड रखा है** और... उसकी पहचान नहीं देनी पड़ती, उसके तेज से अपने आप पता लगता है। पहले कहा जाता था कि *'धी सन नॅवर सॅट्स इन धी ब्रिटिश एम्पायर।'* ऐसा यह स्वामिनारायण का है। सूर्य समान संत, स्वामिनारायण गुणातीत परंपरा में कभी अस्त होते नहीं। आज भी देखोगे प्रमुखस्वामी महाराज, हमारे हरिप्रसादस्वामिजी, पू. महंतस्वामिजी, जशभाई साहेब हैं–वे ऐसे स्वयं प्रकाशित हीरे हैं। इस बात को हम समझें।

यहां एक अखंड परंपरा में हमें बैठना मिला है और हम एक संत से जुड़ गए होंगे और वे संत शरीर छोड़ देंगे, तब भी आप निराधार नहीं होंगे। स्वामिनारायण संप्रदाय-गुणातीत परंपरा में वह परम चेतना मानवस्वरूप में वैसी की वैसी आपको हाज़राहजूर मिलेगी। प्रभु तुम्हें वहां जोड़ भी देंगे। प्रतीति भी कराएँगे कि भगवान इनके द्वारा प्रगट हैं। जिस संत के साथ आप जुड़े हुए थे, उस संत की आपको वहां प्रतीति हो जाएगी कि मेरे लिए मेरे स्वामी यहां पर हैं। यह बहुत बड़ी बात है। इससे **हम हमेशा के लिए सनाथ बन गए!** अनाथ-निराधार नहीं। **यह बात किसी धर्म, संप्रदाय या किसी जगह नहीं मिलेगी, सिर्फ स्वामिनारायण के यहां!** इसलिए गुजराती में कहा जाता है–'स्वामिनारायण संप्रदाय अखंड सौभाग्यवंतानो संप्रदाय छे'; हिन्दी में कहते हैं–सदा सनाथ का संप्रदाय है। यह बात इस कार्ड में ख़ास लिखी है।

...मैं तो कई बार सोचता हूँ कि हिन्दुस्तान की धरती कैसी होगी कि सारे अवतार यहां प्रगट हुए और स्वामिनारायण भगवान ने भी यही धरती पसंद की। मैं कई बार कह भी चुका हूँ कि मुझे कभी विदेश जाने का मन ही नहीं होता है। कहीं भी, कोई ऐसी बात भी करता है, तो मुझे होता है कि–अपने प्रभु जब यहां प्रगटे; तो हम बाहर क्यों जाएँ? जहां अपने प्रभु हमेशा विराजमान रहे हुए हैं, उस धरती में ही बसे रहें। कितनी पवित्र धरती होगी!

हाँ, प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामिजी महाराज, हमारे हरिप्रसादस्वामिजी, साहेबजी की तरह कई चैतन्यों को अपना संबंध देकर कल्याण के मार्ग पर चढ़ाने जाना–वह बात अलग है। अन्यथा, यूँ विदेशों में घूमने से हमें कोई लाभ नहीं होना है।

...**'साकार'** भगवान की हमारी उपासना है। गुणातीत परंपरा में भगवान **'सदा साकार'** हैं। 'सदा साकार' का मतलब–भगवान मानवस्वरूप में सदैव मौजूद हैं। दूसरा–साकार उपासना का गहन अर्थ यह भी है कि भगवान के आकार से रहते हुए **हमें निराकार होना है। संत के आकार से हमें अपने आपको मोड़**

लेना है। मुक्तों के साथ जितना सुहृद्‌भाव से रहेंगे, उतना वह हो सकेगा। यह एक आसान रास्ता बताया है।

भगवान का जो 'स्वरूप' तुम्हें मिला है, वही तुम्हारे लिए कर्ताहर्ता है... कोई भी प्रॉब्लम आए, तो ऐसे संत की स्मृति सहित स्वामिनारायण मंत्र जपो। हर बार मेरे मुंह से सुना होगा–'एक' मंत्र का फल एक। स्वामिनारायण मंत्र भी जपोगे, तो एक मंत्र का फल एक। यही स्वामिनारायण मंत्र ऐसे संत की स्मृति के साथ जपोगे, तो एक मंत्र का फल करोड़ों गुणा होगा-मल्टीटाइम्स! यह भी एक सायन्स है। जैसे बिना माइक के बोलें, तो थोड़ी दूर तक सुनाई पड़ेगा, लेकिन, सामने अगर माइक हो और बोलेंगे तो काफी दूर तक सुन पाएँगे, क्योंकि पावर बढ़ गई। इसी तरह मंत्र की पावर बढ़ गई। कैसे भी अटके हुए काम हों, भगवान प्रगटाए संत की स्मृति के साथ मंत्र का जाप करेंगे तो वो समस्या हल हो जाएगी, आपके हृदय में शांति जरूर प्रदान करेगा। कई बार कई बोलते हैं कि अरे! हम धुन करें, स्वामी को याद भी करें, लेकिन हमारे कर्म ही ऐसे हैं, तो बेचारे भगवान भी क्या करेंगे? अगर हमारे भगवान ही बेचारे हैं, तो ऐसे भगवान क्या काम के? खूब लॉजीकली विचार करना। इसीलिए महाराज को यह कहना पड़ा कि–वे सर्वोपरि हैं। मतलब, काल, कर्म, माया, स्वभाव-कुछ भी उनके आड़े आ नहीं सकता। अगर प्रभु चाहें कि इसका यह काम ऐसे होना है, तो असंभव काम भी इमीडियेट संभव हो जाएगा।

सो, ऐसी **तीन कन्वीक्शन** जिसकी होगी कि–

❋ *भरतखंड में भगवान साकार स्वरूप में अखंड प्रगट हैं*

❋ *वो ही सर्व कर्ताहर्ता हैं*

और

❋ *वो ही सर्वोपरि हैं।*

उसे **वचनामृत गढडा प्रथम प्रकरण 37** में कहे **ग्यारह वरदान** मुफ़्त में मिले हैं। कितना फायदा हुआ है! सिर्फ प्रगट की निष्ठा पक्की रखने में।

कैसे-कैसे वरदान दिए हैं!

1. **वह कैसा भी क्यों न हो, भगवान को वह पसंद है।**

   पढ़ा-लिखा हो , अनपढ़ हो, गंवार हो, एटीकेट में रहता हो - नहीं रहता हो, धर्मवान हो या दुराचारी हो, गरीब हो या धनिक हो, पर वो पसंद। बस भगवान को जो पसंद हो गया, फिर किसकी हुकूमत उस पर चलेगी? जैसे नक्षु मुझे पसंद है, तो तुम कोई उसे डांट सकते हो क्या? मेरे सामने तो किसी की मज़ाल नहीं पड़ती कि नक्षु को कोई डांटे। क्योंकि सब जानते हैं कि रहने दो, गुरुजी का लाड़ला है। ऐसी ही यह बात।

2. **काल का बंधन उस पर नहीं है।** मतलब–काल उसे खा नहीं सकता।

3. **कर्म के बंधन से वह बंधा हुआ नहीं है।**

इसका मतलब यह नहीं समझना कि बेलगाम बरतते जाओ। कहने का मतलब यह है कि गल्ती से या प्रकृति के वश कुछ ऐसा हो भी गया हो, लेकिन ऐसे संत से तुमने दिल की सच्चाई से माफी मांग ली हो, तो वह कर्म का फल तुम्हें भोगना नहीं पड़ेगा।

हमारी गुणातीत ज्योत–विद्यानगर में बहनों के आश्रम में लक्ष्मण बापा चौकीदारी करते थे, अब तो वे एक्सपायर हो गए। पहले लक्ष्मण बापा माणावदर में रहते थे। बापा ने उन्हें नियम दिया था कि रोज़ शाम को आरती के लिए मंदिर जाना। वे शाम की आरती अचूक एटेंड करते थे। एक दिन क्या हुआ कि वे घर से निकले और रास्ते में कोई झगड़ा चल रहा था। अपनी प्रकृति के वश वे भी उस झगड़े में उलझ गए और वहाँ उनके हाथों मर्डर हो गया। मौजूद सभी को पुलिस पकड़ कर ले गई और केस चला। पर, जेल में वे भजन करते और मन में संकल्प करा कि अगर मैं छूट गया, तो बापा! आपके चरणों में गोंडल आ जाऊंगा। वे सिन्सियर थे। हक़ीक़त में स्टॅबिंग तो उसने की थी, लेकिन वे निर्दोष छूट गए! वे जैसे ही छूटे, तो जैसे कि संकल्प किया था, उसके मुताबिक सीधा गोंडल गए, घर नहीं। वे जब बापा के पास गए थे, उसी समय बॅप्स से हमारा बाइफरकेशन हुआ था। बापा ने एकदम कह दिया कि तुम यहां से सीधे बाबुभाई (पप्पाजी) के पास जाओ और वे जो कहें वैसा करना। पप्पाजी उन्हें देख कर समझ गए कि बापा ने रिलाएबल सेवक भेज दिया। उन्हें 'गुणातीत ज्योत' की चौकीदारी पर बैठा दिया। देखो, कर्म भोगना नहीं पड़ा न! लेकिन ऐसी सिन्सियारिटी-ऐसी निष्ठा भी अपने अंदर होनी चाहिए। **हम तो बस–मंदिर में आते-जाते हो जाएँ, तो मानेंगे कि हमें निष्ठा हो गई और महाराज हमारा काम कर दें। ऐसा नहीं होता।**

मानवस्वरूप में मिले प्रगट प्रभु के प्रति जिसकी ऐसी फर्म कन्वीक्शन होगी, उसके ऐसे सारे काम होते हैं।

4. **माया उसे अपने प्रपंच में उलझा नहीं सकती।**

माया में जाए और पछतावा हो, तो महाराज सिफत से उसे वीड्रॉ कर लेंगे, वो फंसा नहीं रहेगा। संक्षेप में, काल, कर्म और माया की उस पर चलती नहीं। उसे दंड देना भी हो, तो प्रभु खुद देंगे। पर, काल, कर्म, माया की हुकूमत नहीं कि उस पर हावी हो जाए। मैली शक्तियों से भी हम कितने प्रोटेक्टेड हैं–विचार तो करो।

5. **ऐसे निष्ठा वाले की चरणधूलि तो भगवान भी अपने माथे पर चढ़ाते हैं।**

कितना बड़प्पन दे दिया! ऐसे भगत की चरणरज प्रभु अपने सिर पर लगाते हैं!!

6. **उसे दुःख देते हुए भगवान मन से डरते हैं।**

ये कलम भी कैसी आई? जो आध्यात्मिक साधना करते हैं, उसका प्रोसेस जो धीमा होता है, प्रभु को ज़रा हल्का कर देना पड़ता है और उसका स्पिरीच्युअल प्रोसेस डिले होता है, उसकी वज़ह भी यह है। क्योंकि–**हमारे स्वभाव, प्रकृति, वासना को जब प्रभु जड़ से निकाल रहे होते हैं, तब भीतर में**

चोट तो लगती है। मानो तुम मान के भूखे हो और मान की वृत्ति तुम्हारे पर हमेशा हावी रहती हो, तो प्रभु ऐसे प्रसंग बार-बार लाते ही रहेंगे, जहां तुम्हारी इन्सल्ट होती रहे। पर, हम समझदारी रखें कि ये प्रभु कर-करवा रहे हैं और हम छोड़ दें। सुहृद्भाव-एकता रखनी हो, तो झुक जाओ। **पप्पाजी** इसे अलग ढंग से कहते थे– ***'जे नम्यो ए प्रभु ने गम्यो।'*** और... प्रभु को जो जंचता है, उसकी विजय है-जय है, ए जीत्यो! **मानो दो भाई हैं, किसी भी कारण आपस में कहीं मतभेद हो गया, लेकिन जो झुक जाएगा वो प्रभु को पसंद आएगा और वो जीत जाएगा। जो हारा वो जीता!**

ये बातें कितनी बार सुनी हैं, लेकिन ऐन मौके पर हमने ऐसा बर्ताव किया है क्या कि चलो मैं झुक जाऊं? और... जब-जब ऐसा बर्ताव किया होगा, तब-तब आपने महसूस भी किया होगा कि जो तरक्की और फ़ायदा मैं अड़ कर उठाना चाहता था, उससे अधिक झुक जाने से कई गुणा मुझे हुआ। पर, **मान एक ऐसी चीज़ है कि हम बार-बार यह बात भूल जाते हैं और किसी अन्य प्रसंग पर ऐसे अड़ियल बन जाते हैं, जिससे प्रभु की प्रसन्नता पाने का मौका चूक जाते हैं। इतना ही नहीं, हम अपना खुद का बिगाड़ते भी हैं। यह न करें।**

7. **उसके दर्शन की भगवान स्वयं कामना करते हैं।**

   भगवान उसके दर्शन करना चाहते हैं। हम ऐसे क्यों न बनें कि भगवान रोज़ पूछें कि भई, वो कहां है? हमें देखने के लिए वे लालायित हों।

8. **ऐसा निष्ठावान मुमुक्षु, जो अपनी साधना के बल से नहीं, बल्कि भगवान के प्रताप से कल्याण चाहता है।**

   यह भी एक बड़ी बात है। हम तो छोटी-सी बात बनती है, तो मानते हैं कि हमने ऐसा किया, सो यह हुआ! नहीं, प्रभु ने मुझसे करवा लिया।

   इस प्रकार जो साधना करता हो, वो नाव या स्टीमर में बैठ कर समुंदर तरने वाला जैसा सयाना है–अक्लमंद है। व्यावहारिक रूप से जो चतुर भी हो, उसे महाराज ने यूँ नहीं नवाज़ा। तभी तो महाराज ने वडोदरा के दीवान को मूर्ख कहा और सब्जी बेचने वाले नाथभक्त को सयाना कहा!

9. **ऐसे सभी निष्ठावान अपने देहभाव को छोड़ कर, यानि–ब्रह्मरूप होकर भगवान के धाम में उनके हजूर में रहते हैं।**

   मतलब–ऐसी निष्ठा वाले ब्रह्मभाव को भी पा सकते हैं। सो ही कहते हैं कि भरतखंड में जन्म हुआ हो और ऐसे गुणातीतभाव को पाए हुए संत का संबंध होने पर भी हम में अगर गुणातीतभाव प्रगटा नहीं, तो हम महामूर्ख हैं। प्रगट प्रभु ने यह प्रोसेस इतना आसान कर दिया है। बड़े-बड़े योगी, मुनि करोड़ों साल की तपस्या के बाद भी जो ब्राह्मीस्थिति प्राप्त नहीं कर पाए, वो हम ऐसी एक निष्ठा से संत की तरफ निगाह रख कर जीने से पा सकते हैं।

10. **उसके दर्शन तो भगवान के दर्शन-तुल्य हैं।**

उसकी आध्यात्मिक कक्षा और स्टेटस इतना ऊंचा बढ़ जाता है कि भक्तगण उसे भगवान का स्वरूप समझ कर उसके दर्शन करते हैं। आध्यात्मिक ऊँचाई भी दे दी और स्टेटस भी दे दिया!

11. **उसके दर्शन से अनंत पतित जीवों का उद्धार हो जाता है–ऐसा महान है वह।**

मुमुक्षु के लिए वो एक **'चैतन्यमाध्यम'** बन जाता है! **काकाजी** जो बात करते थे, वो बात यहाँ आई कि **गुणातीत समाज स्वभाव टालने की, ब्राह्मीस्थिति प्राप्त करने की, प्रभु प्रगटाने की 'फैक्ट्री' है।** फैक्ट्री में कोई एक ही पीस निकलता है–ऐसा नहीं है। एट्लस या हीरो साइकिल की फैक्ट्री देखोगे, तो दिन में कई कितनी साइकिलें निकलती हैं। यूँ **यह गुणातीत समाज** ऐसी **ब्राह्मीस्थिति को पाए हुए भक्तों का 'इन लॉट' मॅन्युफॅक्चरिंग करने की फैक्ट्री है।** हम उसके मेम्बर हैं। तो, सब मिल जुलकर एक अपनेपन से, कुटुंबभाव से, सुहृद्भाव से, एकता से जीकर यह मौका उठा लें, यही नए वर्ष की शुभकामना सह प्रभु से प्रार्थना...

– प.पू. गुरुजी

(ध्वनिमुद्रण पर आधारित)

✡✡✡

'परावाणी' से अनमोल चिंतनकणिकाएं

* भगवान और संत से संबंध होने के बाद वह भले ही लाख कोस दूर हो, फिर भी उनके पास है और पास में रह कर प्रसादी खाया करता हो, पर यदि संबंध न किया हो, तो भी लाखों कोस दूर है।
* महाराज के लिए तो जो उनकी चारपाई के पास बैठे रहते हैं, वे उनके निजी नहीं। जो **सत्संगी के सत्संगी** हैं, वे ही उनके निजी हैं।
* हम **दास के दास होकर रहें और हर एक की सेवा करते रहें, तो भगवान खूब राजी होते हैं।** छोटे से छोटा सत्संगी हो, छोटे से छोटा संत हो उसकी भगवान की बुद्धि से सेवा करें, तो श्रीजी महाराज राज़ी होते हैं।
* **दास का दास होकर रहना ही सच्ची भक्ति है।**
* हममें दूसरों के प्रति ऐसा सद्भाव रहे कि हमें भी ऐसा करना चाहिए, तो समझना हम ब्रह्मरूप हुए हैं।
* **स्वर्ण के महल हों, उसे खाक करके भी इस साधु को प्राप्त कर लें, तब भी साधु सस्ते में मिल गए!**
* पहले टीका-निंदा होगी, फिर सभी बखानेंगे।
* भगवान के **भक्त को भगवान का ही प्राधान्य रहता है।**
* **महाराज** ने कहा है– *'मेरे आश्रित को दानापानी तो मैं दूँगा ही।'*

  इस ज़िम्मेदारी से उनका छुटकारा नहीं। वो तो महाराज ने अपने सिर पर लिया है; वे भूखा उठाते हैं, पर भूखा सुलाते नहीं। पेट भरने के लिए कुछ भी देते तो हैं ही; पर, **प्रभु को भजें इसलिए रंक रखे हैं।**

* **भगवान और सत्पुरुष को मुख्य रखना, (अपना) व्यवहार गौण रखना।**
* महाराज ही हमारा प्रारब्ध बन गए हैं, तो कोई हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकता। ऐसा भरोसा हमें खुद रखना चाहिए और बल रखना चाहिए, तब हमारे काम में भगवान सहाय करेंगे और सिद्ध करेंगे।
* किसी के प्रति भी कुटिल शब्द नहीं बोलना। हमें हमारी अपनी भूल देखनी है। ***''भगवान के भक्त 'ब्रह्म की मूर्तियाँ' हैं''*** – ऐसा भाव यदि रखेंगे तो भगवान का साक्षात्कार हो जाएगा।
* गरज/ जरूरत लगेगी तो (सत्पुरुष की) बातें जँचेंगी।
* **एक जीव को यदि भगवान के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दें, तो ब्रह्मांड को उबारने का पुण्य मिलेगा। एक को इस मार्ग से गिराएँ, तो ब्रह्मांड डूबोने का पाप लगेगा।**
* थोड़ी-सी भी श्रद्धा रखने में ही हमारा काम सर्वोत्तम हो जाता है... यदि सच्चे पुरुष में श्रद्धा रखें, तो हमारे दोष खाक हो जाएँ।
* ***देह और देह के संबंधियों को भगवान और भगवान के भक्तों सरीखे प्यारे नहीं रखना।***

वचनामृत अंत्य प्रकरण-71

पर, वे अधिक प्यारे रह जाते हैं, सो दोष टलते नहीं हैं। वर्ना एक भी दोष अपने आप नज़दीक नहीं फटकेगा; शांति के बैलगाड़े हमारे घर छूटेंगे।

* हम **भगवान और सत्पुरुष का संग करें, तो वे हमें मोक्ष के मार्ग से गिरने नहीं देंगे।**
* **संत और हरिभक्त के लिए कष्ट सहेंगे, तो प्रथम नंबर से पास हो जाएँगे...** लग पड़ेंगे तो काम सिद्ध हो जाएगा।
* अपने भीतर भगवान की मूर्ति अखंड बिठा दी, तो मान लीजिए – हमारा काम पूरा हो गया।
* अंतर को पकड़ा यानि क्या? सत्पुरुष अपनी मूर्ति में जीव को खींच ले और जीव को सेवा नहीं भी करनी हो, तब भी उसे करनी पड़े – वो 'अंतर पकड़ा'!
* **बड़े पुरुष की, भगवान की कृपादृष्टि हो जाए तो स्वाभाविक प्रकृति बदल जाती है।** सो, हमें ऐसी श्रद्धा और ऐसी गरज रखनी चाहिए।
* स्वामी ने जीव पर कैसी दया की? उनके संबंध में जो-जो आता है, उसे 'गुणातीत' बना कर छोड़ते हैं।
* कीड़ा भम्ररी का डंक सहता है, तब वह भ्रमरी बनती है। यूँ जीव को गुणातीत बनाना है। बड़े पुरुष की-स्वामी की हम पर दृष्टि पड़ गई है, तो जीवभाव रहने नहीं देंगे।
* पानी में पड़ा हुआ तेल अलग ही तैरता है। ऐसा ही इस 'गुणातीत ज्ञान' का है। उसे यदि हम ढकना चाहेंगे, तो भी ढक नहीं पाएँगे... दूसरी कितनी ही बातें सुनेंगे, पर वे नीरस लगेंगी, स्वाद नहीं आएगा; जबकि गुणातीत का एक शब्द सुनेंगे तो संतुष्ट हो जाएँगे और शांतिमय जीवन व्यतीत कर सकेंगे।
* **गुणातीत ज्ञान सर्वोपरि उपासना का ज्ञान है, माया का लेश नहीं, जगत का लौंदा नहीं।** ऐसी

स्थिति करवाने के लिए महाराज दया करके आए हैं। हमें इनके शब्दों को पकड़ लेना है, तनिक भी अंतराय नहीं रखना।

- ब्रह्म के संग से ब्रह्म हो पाएँगे। ऐसे **गुणातीत पुरुष का संग यदि हमें मिल जाए, तो वे ब्राह्मी स्थिति पर पहुँचा देते हैं।**
- चिंतामणि पत्थर जैसी ही दिखती है। यूँ भगवान और संत मनुष्य जैसे ही होते हैं, लेकिन वे दिव्य हैं, कल्याणकारी हैं। *'भगवान और संत दिव्य हैं'* – ऐसा कहा गया है। वे मनुष्य जैसे दिखाई देते हैं, खाते हैं, पीते हैं, व्यवहार करते हैं – सब कुछ करते हैं, लेकिन हमें उन्हें दिव्यचक्षु से देखना चाहिए।
- भगवान और संत को यदि पहचाना हो, तो अंतर में शांति व सुख बरतेंगे।
- संत समागम से सुख-दुःख दोनों में शांति बरतती है।
- भगवान और संत को यदि पहचाना हो, तो कल्पना टल जाती है। उनका जितना समागम किया, बातें सुनीं, वही सच्ची कमाई है। उन्हें पहचान लेने से सब कुछ हो जाता है।
- भगवान और संत राज़ी होने पर प्रसन्नता का फल देते हैं।

(शेष अगले अंक में)

2 मार्च, 2014 – प.पू. गुरुजी के 77वें प्राकट्योत्सव की सुबह

पू. मोहित गर्ग (दिल्ली)

...वैसे तो गुरुजी के साथ करीब 20 साल से जुड़ा हुआ हूँ, बट पक्का संबंध वॉज़ फ्रॉम टु थाउज़ण्ड ट्वेल्व – सेवन्टी फिफ्थ बर्थडे ऑफ गुरुजी। बिज़नेस या लाइफ में ग्रोथ करने के लिए एक अपॉर्च्युनिटी चाहिए होती है, यूँ **2012 के फंक्शन में मुझे अपॉर्च्युनिटी मिली।** 2012 में जो प्ले हुआ था, उसमें मेरे एक-दो छोटे से रोल्स थे। दिसंबर से ही फरवरी के फंक्शन के लिए प्रेपरेशन्स शुरू हो गई थी। वो दो महीने हम डेइली घर से मंदिर, मंदिर से घर आते थे। वो दो महीने चेईंज्ड मी कम्प्लीट्ली; धॅट वॉज़ एन अपॉर्च्युनिटी जो एक मिली–ब्लेसिंग्स!

...जो दो साल पहले मैं था और दो साल बाद अब मैं हूँ, उसमें मुझे लगता है कि काफी डिफरन्स आ चुका है। कल विपिन ने भी बात की थी कि **गुरुजी हर किसी के साथ उसके लेवल पर आकर उसके अंदर भगवान की महिमा बसाने के लिए रिलेशनशिप स्ट्रॉंग करते हैं, वे हमारे लेवल पर आकर बात करते हैं।**

...अभी भी मुझे थोड़ी हिचक रहती है कि गुरुजी से क्या बात करनी है और क्या बात नहीं करनी है? वो मेरे मन का चोर है। बट पिछले कुछ दो-तीन महीने में ऐसा मौका लगा कि जहां-जहां गुरुजी दिल्ली से बाहर गए, वहां-वहां अपने साथ ले गए।

गुरुजी ने शायद नक्षु से कहा होगा कि जब भी बर्फ पड़ेगी, तो मैं तुझे वह दिखाने के लिए मसूरी लेकर जाऊंगा। अभी एक डेढ़ महीने पहले ही मसूरी में काफी अच्छी बर्फ पड़ी।

सुबह 11 बजे ऑफिस टाइम में अभिषेकभाई का फोन आया– *गुरुजी पुछवा रहे हैं कि बर्फ देखनी है?*

तो मैंने कहा– *हाँजी।*

उन्होंने पूछा– *मसूरी चलना है?*

मैंने कहा– *हाँजी।*

वे बोले– *एक घंटे तक में आ जाओ, घंटे भर में निकलना है।*

हम तीन गाड़ियाँ लेकर चले। तब कुल 20 जने थे और वे सभी यंगस्टर्स थे। उन दो दिन गुरुजी ने किसी से कोई सेवा नहीं करवाई। अपने साथ बिठा कर हमें खाना खिलाया। शाम को बैठ कर बातें कर रहे थे, तो बोले सोफे पर बैठो, नीचे नहीं बैठना। **ही ऑल्सो बीकेम ए चाइल्ड विथ अस।** हमारे साथ दो दिन बिल्कुल एक यंगस्टर की तरह मज़ा किया।

उसके बाद फिर भरत अंकल, वशी अंकल और अरुणभाई के 60वां बर्थडे के लिए (फरवरी 2014 में) मुंबई जाना हुआ। वहाँ हम चार-पांच दिन रूके थे। यूँ जब बाहर जाते थे, तो गुरुजी के साथ थोड़ा ज्यादा समय स्पेंड करने को मिलता था। दरअसल, अपनी जो एक हिचक दबी होती है, मन की चोरी होती है कि गुरुजी बीज़ी होते हैं... यह बात करनी चाहिए या नहीं या क्या कहना चाहिए या क्या नहीं? वो हिचक एक तरीके से ऐसे ट्रिप्स से टल गई। इसके लिए मैं गुरुजी को बहुत थँक्स बोलता हूँ। अब मुझे ऐसा लगता है कि मैं और पास आ पा रहा हूँ... **एक उद्देश्य है कि हमें गुरुजी को राज़ी करना है। गुरुजी के साथ हमारी क्लोज़नेस और रिलेशनशिप बढ़ानी है।**

गुरुजी से यह प्रार्थना करूंगा कि आपके सेवक का सेवक बन कर रहें और आपको राज़ी कर सकें–ऐसा आप आशीर्वाद दीजिएगा।

पू. हेमंतभाई मर्चंट (पवई)

...बचपन से हमारा गुरुजी के साथ संबंध रहा है। मुझे यह कहने में ज़रा-भी हिचकिचाहट नहीं है कि मेरे पिताजी और ताऊ गोरधनकाका के नज़दीक मैं जितना नहीं रहा, उससे कई गुना नज़दीक गुरुजी रहे हैं। वे मेरे पिताजी को पिता तुल्य ही मानते थे और उन्होंने भी उसी तरह गुरुजी के साथ संबंध रखा था। गोरधनकाका के साथ तो उनका संबंध हमने देखा था।

अभी थोड़े दिन पहले एक ई-मेल आया था, उसमें आजकल दिल्ली में अरविंद केजरीवाल के बारे में कहा जाता था कि धेर इज़ ए मॅथड इन हिज़ मॅडनेस... **गुरुजी** की लाइफ फ्रॉम धी डे वन–जो देखी है, उसके लिए भी मैं कह सकता हूँ कि ही **हॅज़ ऑलवेज बीन एन एक्सेप्शन ऑफ धी रूल। पर, धेर इज़ ए मॅथड इन हिज़ मॅडनेस। वो मॅथड क्या था? योगीजी महाराज के प्रति या तो उनके बाद काकाजी के प्रति,**

गुणातीत स्वरूपों के प्रति एक सच्चा लगाव! वो मॅडनेस होनी चाहिए... अगर वो मॅडनेस नहीं होगी तो सिर्फ मॅथड रखने का कोई फ़ायदा नहीं होगा। हम तो इतने सालों से देख रहे हैं कि **उन्होंने काकाजी के प्रति जो मॅडनेस रखी, उनके सिस्टम में थी वही सच्चा मॅथड है। इसीलिए वे सबसे अलग-यूनीक हैं कि–ऐसा दूसरा कोई नहीं। वो अपने आप में एक हैं।** हमने गुरुजी का सारा जीवन देखा है कि वे एक सिस्टम से पूरे अलग हो जाते थे। **अभी भी वे जहां भी आते-जाते हैं, जहां भी रहते हैं, किसी से मिलते हैं, तो उनकी लाइफ स्टाइल नॉर्मल साधु-संत जैसी भी है और उनसे कहीं अलग भी है–वो यूनीक है।** उनके द्वारा जो कार्य हो रहे हैं, उसके तो हम साक्षी हैं। बीकॉज़ ऑफ धेट मॅडनेस उनके अंदर हमें यह दर्शन हो रहा है।

पहले से गुरुजी का निखालिस-फ्रेंक नॅचर है। उस फ्रेंकनेस को मैं सलाम करता हूँ। मेरे अंदर वो फ्रेंकनेस आए, वह ध्यान में रख कर मैं यहां बात कर रहा हूँ... **गुरुजी के जो गुण हमने देखे हैं उसमें–एक है सत्पुरुष के प्रति हेत।** मतलब, **इंटीमसी या लव इंटीमसी–जो काकाजी कहते थे। संत के प्रति अगर हमें ऐसा हेत नहीं हो और सत्संग में 50 साल भी बीत जाएँगे, तो भी हमारी कोई प्रोग्रेस नहीं होगी। संत के साथ अगर इंटीमसी हो जाए और... बाकी कुछ भी नहीं होगा, तो भी संत हमें संभाल लेंगे। गुरुजी में फ्रॉम डे वन–यह बिल्कुल दृढ़ हो गई थी। उनका नॅचर ही ऐसा है कि लव इंटीमसी से किसी को अपना मान लिया तो मान लिया!**

दूसरी बात है–जिसके साथ लव इंटीमसी हो जाए, उस संत के प्रति विश्वास जरूरी है... गुणातीतानंदस्वामी ने कहा था कि जला भगत को मुझसे बहुत हेत है, लेकिन उसे मेरा विश्वास नहीं आता और इसीलिए उसकी जो प्रोग्रेस होनी चाहिए, वो हो नहीं पा रही है। **गुरुजी का जीवन देखा है कि उन्हें जब से योगीजी महाराज के प्रति हेत हुआ, उसके बाद उन्होंने उनका पूरा विश्वास भी किया। विश्वास किया तभी भगवा कपड़े लिए न! काकाजी के प्रति भी उन्हें हन्ड्रेड परसेन्ट पूरा विश्वास था, तो उस विश्वास के ज़रिए आंख बंद करके उन्होंने सिर झुका दिया।** फलस्वरूप आज वे कैसे संत हो गए–वह हमारे सामने है।

तीसरा है–आज्ञा को टूक-टूक पालना। विश्वास आने के बाद भी संत की आज्ञा पालना बहुत ही कठिन है... ऐसी कई आज्ञा हैं जो योगीजी महाराज ने या काकाजी ने दी–उन्होंने उनका निरंतर पालन किया है। यहाँ दिल्ली में आना कैसी-कितनी बड़ी आज्ञा है। आज से चालीस साल पहले यह कोई मामूली बात नहीं थी। **यहां पर कोई स्वामिनारायण का 'स' तक नहीं जानता था, उनकी मातृभाषा भी हिन्दी नहीं थी। उनका नॅचर सबके साथ मिलजुल कर ही नहीं, बल्कि सबके साथ रहने का था। तब उन्हें अकेलापन लगता होगा। लेकिन काकाजी ने कहा और वे आ गए।** क्या हुआ-क्या नहीं, वो पूरा इतिहास हम सभी को पता है... पर, **गुरुजी काकाजी के एक जमूरे बन गए हैं।** तो हमारा फर्ज़ है कि अब

हम गुरुजी को इस तरह से देखें... **हम सब काकाजी के पास, उनके साथ रहते थे, लेकिन गुरुजी ने अलग ढंग से ही देखा है।**

एक प्रसंग बताता हूँ। काकाजी नंदाजी के यहाँ गए थे। गुरुजी व योगीस्वामी साथ में थे।

काकाजी ने गुरुजी से पूछा–*तू गाजर का ज्यूस लेगा या मिक्स।*

गुरुजी ने फ्रेंकली कह दिया–*मैं संतरा-मौसमी का मिक्स ज्यूस पीऊंगा।*

काकाजी ने एक गाजर का और दो मिक्स ज्यूस का ऑर्डर दिया। लेकिन, जब ज्यूस बन कर आया, तो काकाजी खुद मिक्स पी गए और गुरुजी को गाजर का दे दिया।

गुरुजी सोच में पड़ गए–*कमाल है, पहले तो मुझसे पूछा कि मुझे कौन-सा ज्यूस चाहिए? अब जब आया तो खुद मिक्स पी गए और मुझे गाजर का दिया!*

पर, काकाजी के साथ उनका संबंध कैसा?

बाद में उन्होंने काकाजी से पूछा–*आपने यह क्यों किया? मेरी पसंद का ज्यूस तो मुझे दिया नहीं और दूसरा ही पकड़ा दिया।*

तब काकाजी ने कहा–*अच्छा हुआ जो तूने मुझे पूछ लिया। तुम्हें तो मुझे ऐसा कहना चाहिए था कि काकाजी आप जो चाहो वह पीऊंगा।*

यूँ उन्होंने काकाजी से पूछा तो यह ख्याल पड़ा कि काकाजी या ऐसे गुणातीत संत के प्रति हमारा वर्ताव किस तरह का होना चाहिए... यूँ, **उन्होंने काकाजी की एक-एक मोमेंट को ट्रेक किया है और उसके पीछे जो स्पिरीच्युअल मीनिंग डिराइव हुआ, वो अपनाया है...** तो, आज हम देख रहे हैं कि **वे पाथ फाइंडर भी हैं और पाथ मेकर भी हैं। जो कोई नहीं कर सकता है, ऐसे-ऐसे काम उन्होंने स्वामिनारायण भगवान-काकाजी के किए हैं... ऐसी तीव्रता से, दिल की लगन से काकाजी को आत्मसात् किया है कि वो खुद काकाजी की पहचान बन गए हैं।**

1976 में मैंने हरिन्द्र दवे की–**'माधव क्यांय नथी'** किताब पढ़ी थी। उसमें बताया है कि कृष्ण अवतार में विष्णु धरती पर आए हैं, तो नारदजी को हुआ कि उनसे मिलने पर इस दुनिया के सभी जटिल प्रश्न सॉल्व हो जाएँगे और मेरे मन को भी शांति मिलेगी। तो, राइट फ्रॉम श्रीकृष्ण के बर्थ, नारदजी कृष्ण भगवान को ट्रेक करते रहे, लेकिन वे कहीं भी जाते, तो कृष्ण वहाँ से निकल जाते थे... पर, एक बार कृष्ण भगवान ने उन्हें मॅसेज भेजा था कि नारद से कहना कि उसके लिए ही अभी तक धरती पर मैंने अपना जीवन बचा कर रखा है और तुझसे बहुत सारी बातें करनी हैं। भगवद्गीता में तो उन्होंने कह भी दिया कि **देवर्षियों में 'मैं नारद हूँ'**।

और... बलरामजी ने कहा है कि **नारदजी की तड़पन में कृष्ण हैं।** सो, नारदजी कृष्ण से एक बार भी नहीं मिले हैं, फिर भी उन्होंने कृष्ण को आत्मसात् कर लिया... यूँ, **गुरुजी से हमारी यही प्रार्थना है कि आपके जैसी तड़पन और निखालिसभाव हम में आए।**

पू. नंदुभाई (गुणातीत ज्योत)

...पप्पाजी ने एक बार सभा में कहा था कि मेरी सेवा करोगे, तो मैं सौ प्रतिशत मार्क दूँगा, मेरे संतों की सेवा करोगे, तो एक हज़ार मार्क दूँगा और अल्प संबंध वाले की सेवा करोगे तो एक लाख प्रतिशत अंक दूँगा। गुरुजी एक-एक लाख प्रतिशत मार्क लूट रहे हैं।

...अलग-अलग प्रकार के भक्त होते हैं। सभी स्वभाव से पर तो जीते नहीं हैं। उनमें हमें कुछ न कुछ दिखाई देता ही रहता है कि यह ठीक नहीं करता, यह करता है; यह बराबर है, यह नहीं। **गुरुजी** यह कुछ नहीं देखते, **केवल संबंध देखते हैं।** तो, अल्प संबंध वाले में भगवान को देखने की आप में जो शक्ति आई है, वह शक्ति हमें प्रदान करना–ऐसी आपके जन्मदिन की प्रार्थना!

प.पू. महेन्द्र बापु (शिकागो)

...रामायण की एक चौपाई में बताया है–***गुरु अपने शिष्य को केवल अपना ज्ञान ही नहीं; बल्कि अपना रूप भी दे देता है।*** **आज दो दिन से मैं गुरुजी को देख रहा हूँ, तो गुरुजी नज़र नहीं आ रहे, काकाजी नज़र आ रहे हैं।** ये मैं सच कह रहा हूँ, बोलने के लिए बोलता हूँ–ऐसी बात नहीं। हम तो बोलते हैं कि **गुरुजी की छवि गुणातीत जैसी है।** पहले मुझे गुणातीत जैसी लगती थी, **पर आज मैं गुरुजी को देखता हूँ तो काकाजी का रूप नज़र आता है।**

गुरुजी की एक विशेषता है कि वो मित्र नहीं है, सच्चे मित्र हैं। यहां पूरा इतना समाज जो बना हुआ है वो करामत उन्होंने काकाजी से सीखी है। काकाजी ऐसे थे कि जिसके लिए जीते थे, उसके लिए 'टोटल' जीते। जिस-जिस फेमिली ने विमुख प्रकरण के समय काकाजी और पप्पाजी को साथ दिया, काकाजी ने उस फेमिली को मानो गोद ले लिया! आज भी उन फेमिलीज़ की वे परवरिश कर रहे हैं। ऐसे ही, यहां भी जिस-जिस ने गुरुजी को शुरुआत में साथ दिया है–भले ही आज और लोग भी आते हैं, फिर भी आज उन फेमिलीज़ को वे भूले नहीं हैं और सबको इतना ही प्यार देते हैं... ए-103 में गुरुजी द्वारा लिखवाया एक सन्टेंस याद आता है – ***ग़लती कोई करे और माफ़ी हमें मांगनी, ऊपर से डांट भी हमें खानी–वही गुणातीत संत की रीति-नीति है।*** **वही रीति आज गुरुजी में नज़र आती है** – कोई ग़लती करे तो माफ़ी भी हमें मांगनी और भजन भी हमें ही करना है। **इसी वजह से यहां हरा-भरा लगता है। गुरुजी बोल्ड भी हैं।** काकाजी ने एक सन्टेन्स कहा है–*डोन्ट कन्सीडर धी फॅक्ट्स एज़ धे आर, गो एकॉर्डिंग टु योर इनर कन्विक्शन।*

...हमारा दिल्ली का मंडल देख कर ऐसा लगता है कि गुरुजी ने काकाजी का सपना साकार किया है। आत्मबुद्धि और प्रीति से सब भक्तों को लाड़-प्यार देते हैं और कहीं जरूरत लगे तो डांटते भी हैं। गुरुजी का नेचर वेरी फ्रेंक है। उनकी फ्रेंकनेस मुझे टच कर जाती है। वे डिप्लोमेट भी हैं, होशियार भी हैं। कोई उन्हें बुद्धू नहीं बना सकता। समझते हैं, लेकिन फिर भी वे हमारे पास–हमारे

लिए बहुत सरल हैं। दोस्ती वे निभा सकते हैं। तभी तो ये सब पुराने या नए परिवार यहां आनंद-मंगल और किल्लोल से रहते हैं। **काकाजी ने जो 'मैत्री'शब्द दिया, उसे गुरुजी ने पूर्णरूप से साकार किया है...** मेरा भी काकाजी के साथ गुरुजी जैसा बिल्कुल खुला संबंध था और काकाजी को भी वह अच्छा लगता था। तो, वे मुझे सही जवाब देते थे-बोल देते थे... ही वॉज़ मिस्टिक! वी कॅन नॉट मेज़र हिम।

...यहाँ अव्यवस्था में व्यवस्था देखना ही साधना है। बाकी कोई साधना नहीं है। यहाँ प्रभु का राज है, इतना ही समझ लो। वही समझने के लिए हम यहाँ आए हैं... **काकाजी ने सबको एक शब्द दिया है–'निर्दोषबुद्धि'। वो निर्दोषबुद्धि गुरुजी ने सीखी है।** उसे वे पल-पल अभिव्यक्त करते हैं। उसके फलस्वरूप यहाँ आनंद आता है। इंडिया में होता हूँ, तब हर महीने की सात तारीख को मैं हमेशा मुंबई में ही रहता हूँ। इस बार मैंने वशीभाई से कहा कि इस सात तारीख को मैं दिल्ली में रहूँगा। **गुरुजी ने ये भक्तों के परिवार में-दिलों में आज भी काकाजी के प्रति वैसी की वैसी ज्योत, वैसी की वैसी लगन ज्वलित रखी हुई है। गुरुजी ने काकाजी की महिमा की बात इस प्रकार से की है कि आप सबको काकाजीमय बना दिया है। काकाजी वॉज़ रीयली–नॉट ए जीनियस, बट ही वॉज़ ए जीनियस अमंग्स्ट ऑल जीनियसिस–ऐसे गुरुजी हैं।**

फिर से कह रहा हूँ कि मैं दो दिन से गुरुजी को देखता हूँ तो मुझे गुरुजी नज़र नहीं आते। गुणातीत का रूप नज़र नहीं आता, मतलब उनका देह नज़र नहीं आता है, लेकिन उनमें काकाजी नज़र आते हैं। तो, **यह गुरुजी की नहीं, काकाजी की ही जयंती है।** हम गुरुजी के चरणों में प्रार्थना करें कि हम भले या बुरे जो भी हों, पर हम आपके हैं... मैं जब 'ब्रह्मप्रवाह' पुस्तक पढ़ता हूँ, तो लगता है कि **काकाजी ने** गुरुजी को पहले से ऐसा पसंद किया हुआ है। अपना दिल निचोड़ कर उन्हें कथा की है, दिल निचोड़ कर आशीर्वाद दिए हैं और **दिल निचोड़ कर उनके पास अपेक्षा रखी हुई है और गुरुजी ने उसके ऊपर चार चांद लगाए हैं।** ऐसा हम भी करें–यही गुरुजी के चरणों में प्रार्थना।

✡✡✡

भक्ताधीन प.पू. गुरुजी का पंजाब दौरा...

किसी व्यक्ति का किसी ने थोड़ा-सा भी रखा हो, तो वह नहीं भूलता; तो भगवान के लिए हमने कुछ किया हो या करें, तो वे कैसे भूलेंगे? ये भगवान तो कुछ भी भूलें ऐसे नहीं हैं...

(स्वामी की बात प्रकरण 1-176)

अबकी बार 5 नवंबर से 8 नवंबर 2014 तक प.पू. गुरुजी का पंजाब दौरा मानो स्वामी की उपरोक्त बात का हूबहू दर्शन था।

हम सभी जानते हैं कि पंजाब के लुधियाना, सवद्दी कलां, जगरांव और मोगा में ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज ने सत्संग सभा, प्रभात फेरियाँ और कई घरों को पावन करके 'स्वामिनारायण सत्संग' के बीज बोए हैं। सभी को अपने दर्शन, सेवा, समागम का लाभ देकर 1985 दिसंबर तक निहाल किया। मार्च 1986 में ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के स्वधामगमन

के पश्चात् पंजाब में मुक्तों की माया कूदी और सत्संग के कुसंग ने सेंध मारी, लेकिन ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के प्रति अनन्य निष्ठा के बल से जी रहे मुक्त डिगे नहीं और प.पू. गुरुजी द्वारा ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज को जीवंत पाकर वे दिल्ली सत्संग समाज से खूब अपनेपन से जुड़े रहे।

अन्नकूटोत्सव की थकान एवं दिल्ली में मौसम के बदलाव के कारण प.पू. गुरुजी की तबियत थोड़ी नरम-गरम थी, फिर भी ऐसे **अपनेपन की मिसाल बने जगरांव के हमारे प.भ. महेन्द्र जयस्वालजी** के बड़े बेटे **चि. विक्रम** की शादी के निमित्त प.पू. गुरुजी ने दिल्ली व अमदावाद के कुछ मुक्तों को साथ में लेकर पंजाब जाने का कार्यक्रम बनाया।

1997 में दिल्ली-अक्षरज्योति में भगवान भजती बहनों के भवन निर्माण का कार्य शुरू हुआ। उसी दौरान प.भ. महेन्द्र जयस्वालजी ने जगरांव में एक प्लॉट खरीद रखा था। लेकिन, जैसे ही उन्हें मालूम हुआ कि इस प्रकार भवन निर्माण का कार्य शुरू हुआ है, तो उन्होंने प.पू. गुरुजी से कहा – जब तक बहनों का भवन पूरा बन नहीं जाएगा, तब तक मैं अपने मकान का निर्माण कार्य शुरू नहीं करूँगा और... वे इस हेतु अपनी सेवा भी लगातार भेजते रहे। 25 अक्तुबर 2007 शरदपूर्णिमा-मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी की प्राकट्य तिथि व प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के भागवती दीक्षा दिन एवं प.पू. दिनकरभाई की प्राकट्य तिथि के मंगलकारी दिन प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के करकमलों से 'अक्षरज्योति' भवन का उद्घाटन हुआ और... उसके बाद प.भ. महेन्द्र जयस्वालजी ने अपना मकान बनाने की शुरुआत की। ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के ऐसे निष्ठावान आत्मीय भक्त को राज़ी करने के लिए प.पू. गुरुजी ने अपनी नासाज़ सेहत की परवाह न की। यहां सहज ही एक भजन की पंक्ति याद आती है –

एक पग जो भरुं तेरे कारण, तू दौड़ा चला आए...

सो, **5 नवंबर** की सुबह करीब साढ़े आठ बजे प.पू. गुरुजी करीब तीस मुक्तों के साथ बाय कार पंजाब के लिए रवाना हुए। रास्ते में मुरथल के **प.भ. श्यामसुंदरजी** के ढाबे में उनके द्वारा भाव से परोसे गए परांठों का अल्पाहार लेकर 'खन्ना' के लिए रवाना हुए। करीब दोपहर साढ़े तीन बजे वहाँ **प.भ. राजेश गौतमजी** के घर ठाकुरजी का प्रसाद लेकर 'लुधियाना' जाने के लिए निकल गए। दोपहर के बाद पुराने जोगी **प.भ. कमलदेवजी** के घर जाते हुए देर शाम को सवद्दी कलां पहुँचे। वहाँ **प.भ. सोनू-वंदन** के घर रात का प्रसाद लेकर करीब पौने दस बजे जगरांव में **प.भ. दलजीतसिंहजी** के घर पहुँचे।

उत्तर भारत एवं पंजाब में अधिकांश लोगों की आस्था वैष्णोदेवी-**'माता रानी'** में बनी हुई है। अतः पिछले वर्ष नवरात्र में पहली बार प.पू. गुरुजी ने अक्षरज्योति में नौ दिन **'माता रानी'** की मूर्ति स्थापित करवाई थी। प्रगट प्रभु के भक्तों की महिमा समझाने हेतु प.पू. दीदी ने 'अक्षरज्योति' में **भगवान भजती गंगा** को ही **'माता रानी'** के रूप में सजाकर, उसकी गोद में श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की मूर्ति बिठा कर एक कट आउट तैयार करवाया था। लगातार नौ दिन तक बहनों-भाभियों ने उस मूर्ति की पूजा-आरती भी की। चूँकि **प.भ. दलजीतसिंहजी** गंगा के पिताश्री हैं, सो प.पू. दीदी **'माता रानी'** का रूप धारण की गंगा की वह मूर्ति फ्रेम करवा कर साथ में लाई थीं

और प.भ. दलजीतसिंहजी के परिवार को गुरुपर्व की भेंट रूप दी। तब प.पू. गुरुजी ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए खूब अद्‌भुत आशीर्वाद दिया –

*सालों पहले पंजाब के एक परिवार की लड़की के पूर्व के बलिष्ठ संस्कारों को देखते हुए काकाजी ने कहा था कि **यदि यह लड़की भगवान भजे तो,** पंजाब की देवी के रूप में पूजी जाएगी। लेकिन, संजोगवश वह हो न सका। परंतु, काकाजी का वो आशीर्वाद आज दलजीतसिंहजी ने झेल लिया ! जगत में जो ऐसी मूर्ति रखते हैं, वो भी किसी न किसी की या काल्पनिक ही होती है। सो, कोई यह न समझे कि यह 'गुग्गु' उर्फ 'गंगा' है। **यह 'माता रानी' ही है और... किसी को कोई भी समस्या हो, इस मूर्ति के सामने बैठ कर पंद्रह मिनिट 'स्वामिनारायण महामंत्र' की धुन (भजन) करेगा, तो 'माता रानी' की गोद में विराजमान ठाकुरजी उसकी प्रार्थना अवश्य सुन कर समाधान-शांति देंगे।***

स्वामिनारायण संप्रदाय के विषय में जिसने कभी सुना ही न हो, ऐसे सिक्ख परिवार के प.भ. दलजीतसिंहजी ने अपनी बेटी गंगा की **भगवान भजने की इच्छा** जान कर, पहली बार में सहजता से 'हाँ' भर दी और प.पू. गुरुजी का अतिशय भरोसा रखते हुए प.पू. दीदी की निश्रा में 'अक्षरज्योति' रहने भेज दिया – इसी का यह फल है।

रात को प.पू. गुरुजी एवं कुछ मुक्त प. भ. दलजीतसिंहजी के घर ठहरे और अन्य सभी प. भ. बलवंतराय भारद्वाजजी, प.भ. अशोक शर्माजी एवं प.भ. डॅंड साहेब के घर ठहरे।

अगले दिन – **6 नवंबर, गुरु नानकदेवजी** की जयंती यानि – **गुरुपर्व (प्रकाश उत्सव)** था, जो कि पंजाबीओं के लिए दीवाली कही जाए। ऐसे मंगलकारी दिन प.भ. दलजीतसिंहजी के घर सुबह 6:40 की धुन की। नाश्ता करने के बाद सुबह नौ बजे **प.भ. अनूपजी** से भजन सुनने के बाद, सभी ने प.पू. गुरुजी के आशीर्वाद का लाभ लिया। इस दौरान प.पू. गुरुजी ने गुरु नानकदेवजी की महिमा भी समझाई और तब... अंतर के भाव प्रकट करते हुए **प.भ. दलजीतसिंहजी** तो बोले – ***गुरुपर्व के दिन गुरुजी के रूप मेरे गुरु नानक ही आए हैं।***

सभा के बाद सभी मुक्तों ने प.भ. महेन्द्र जयस्वालजी के घर दोपहर का प्रसाद लिया। प.पू. गुरुजी दोपहर को प.भ. अशोक शर्माजी के घर आ गए और वहीं आराम किया। रात को आठ बजे के करीब प.भ. महेन्द्रजी अपने बेटे चि. विक्रम एवं परिवार के साथ प.भ. अशोकजी के घर प.पू. गुरुजी के दर्शन करने के लिए आए। थकान के कारण प.पू. गुरुजी विश्राम में चले गए थे, सो पू. सुहृद्‌स्वामी एवं पू. मैत्रीस्वामी ने दूल्हे को नारियल एवं दही-जीरा खिला कर प.पू. गुरुजी की ओर से शुभकामना दी। रात को दस बजे प.पू. गुरुजी मुक्तों के साथ विवाह स्थल पर गए। वहाँ तकरीबन डेढ़-दो घंटा बैठे। विवाह की शुभाशीष के रूप श्री ठाकुरजी की मूर्ति चि. विक्रम को देकर प.पू. गुरुजी प.भ. अशोकजी के घर लौटे।

7 नवंबर की सुबह 6:40 की धुन करने के बाद, सामान पैक करके, प.पू. गुरुजी एवं सभी सुबह नौ बजे **प.भ. अशोक वधवाजी** के घर नाश्ता करने गए। हर बार की तरह उनके द्वारा प्रेमभाव से परोसे पकौड़ों का नाश्ता करके सुबह करीब ग्यारह बजे

पटियाला **प.भ. विमल चोपड़ा** (प.पू. दीदी के पूर्वाश्रम की छोटी बहन सौ. अंशु दीदी) के घर जाने के लिए रवाना हुए। पटियाला में प्रवेश करने से पहले सबको आनंद-लाड़ कराते हुए, स्मृतियाँ देते हुए 'वेरका' डेरी पर प.पू. गुरुजी ने ठंडे दूध एवं कोल्ड कॉफी का प्रसाद दिया। प.पू. गुरुजी का स्वागत करने के लिए प.भ. विमलजी भी वहां आ गए थे। दोपहर साढ़े तीन बजे उनके घर पहुँच कर सभी ने थोड़ा भोजन किया और विश्राम करने गए। सायं पौने छः बजे अल्पाहार के बाद धुन की और सभी ने प.पू. गुरुजी का आशीर्वाद प्राप्त किया। रात को करीब सवा आठ बजे प.पू. गुरुजी सभी मुक्तों को लेकर प.भ. विमलजी की दुकान पावन करने के लिए गए। वहाँ तकरीबन डेढ़ घंटा प.पू. गुरुजी बैठे और धुन करवाई। साथ में गए मुक्तों ने वहां से पंजाबी सूट्स की खरीददारी की और घर लौटे। पटियाला के कुछ स्थानिक हरिभक्त प.पू. गुरुजी का दर्शन करने के लिए वहाँ आए हुए थे। रात को ग्यारह-सवा ग्यारह बजे सभी ने प्रसाद लिया और साढ़े बारह बजे विश्राम में गए।

8 नवंबर की सुबह 6:40 की धुन करने के बाद तैयार होकर सभी ने दस बजे तक नाश्ता कर लिया और करीब ग्यारह बजे दिल्ली के लिए रवाना हुए। दोपहर पौने एक बजे अंबाला से थोड़ा पहले प.पू. गुरुजी फ्रेश होने के लिए हाई वे पर एक रिसोर्ट में रुके और... वहाँ रिसेप्शन पर बैठे लड़के से पूछा– *हम यहाँ अपना लाया भोजन खा सकते हैं?* उसके हाँ करने पर सभी भोजन करने के लिए बैठ गए। रिसेप्शन पर श्री अनीश–जो लड़का मिला था, रिसोर्ट एवं बगल का पेट्रोल पम्प उसके पिता का ही था। सो, पेट्रोल पम्प पर बैठे अपने पिता **श्री अनिल गुप्ताजी** को भी वह बुला कर ले आया। श्री अनिलजी ने अपना सारा परिचय देते हुए बताया कि उन्होंने प.पू. प्रमुखस्वामिजी के दर्शन किए हुए हैं। प.पू. गुरुजी को खूब खुशी हुई और... उन्होंने भी सबके साथ प्रसाद लिया।

वर्षों से प.पू. गुरुजी के श्रीमुख से सुना है कि संबंध में आने वाले पूर्व के मुक्त ही होते हैं। यहाँ प्रभु ने वह एहसास कराया। प.पू. गुरुजी दिल्ली से कहते हुए आए थे कि वापसी में खेतों से फूलगोभी और मूली लेते जाएँगे। सो, बातचीत करते हुए साथ में आए मुक्तों के मुँह से यह बात निकल गई कि हमें फूलगोभी और मूली के खेतों में जाना था, पर रास्ते में कहीं दिखाई नहीं दिए। श्री अनिलजी ने यह बात सुनते ही फोन द्वारा ऐसे खेत का पता करके खुद जाकर थोड़ी फूलगोभी तुड़वा कर रखी और खेत के मालिक को कह कर प.पू. गुरुजी व सभी को वहाँ बुला लिया। सभी के साथ जब प.पू. गुरुजी वहाँ पहुँचे, तब ख्याल आया कि खेत हाई वे से खूब अंदर था! मालिक की रज़ामंदी से संत व मुक्त ढाई घंटे तक खेत में गोभी तोड़ने में लगे रहे। श्री अनिलजी भी वहीं मौजूद रहे! यूँ प्रथम परिचय में ही श्री अनिलजी ने तीन घंटे का अपना समय हमारे लिए निकाला! पूर्व का ही संबंध होगा न इनका संतों-मुक्तों के साथ।

प.पू. गुरुजी काफी सालों से बाय ट्रेन या प्लेन पंजाब जाते हैं, लेकिन अबकी बार बाय कार गए। दरअसल, संत के जॅस्चर्स हेतुलक्षी नहीं, पर चैतन्यलक्षी ही होते हैं। यूँ, बाय कार आ-जाकर श्री अनिलजी को अपना संबंध देना होगा!

सांकरदा मंदिर के कोठारीस्वामिजी पूज्य उपेन्द्रस्वामिजी को श्रद्धासुमन...

दिल्ली मंदिर से जुड़े अधिकांश मुक्तों को ज्ञात है कि–
तीन वर्ष पूर्व मंदिर के अधूरे निर्माण कार्य के सेवायज्ञ में
सांकरदा से पू. बापुस्वामी के साथ **पू. उपेन्द्रस्वामिजी (कोठारीस्वामिजी)** आए थे।
तकरीबन तीन-चार महीने यहाँ रह कर सभी मुक्तों को उन्होंने अपनेपन का एहसास कराया।
इससे भी अधिक **प.पू. गुरुजी** ने इनके विषय में बात करते हुए कहा भी था–
सांकरदा से आए इन संतों का वर्तन 'जूनागढ़ी साधु' की पहचान कराता है...
गुरुहरि योगीजी महाराज ने जब **51 योगेश्वरों** को साधु बनाने का बिगुल बजाया, तब उन्होंने बताया था–
'माणावदर' गाँव में अट्ठारह मुक्तों ने जन्म लिया है।
प.पू. बापा ने सर्वप्रथम प.पू. महंतस्वामी के ग्रुप में 10 युवकों को पार्षदी दीक्षा दी थी।
उसमें ये पू. कोठारीस्वामिजी माणावदर के प्रथम युवक थे,
जो **प.पू. काकाजी एवं प.पू. पप्पाजी** से जीव में प.पू. योगीबापा का माहात्म्य संजोकर पार्षद बने
और
पू. महंतस्वामिजी की निश्रा में मुंबई-'घाटकोपर' रहे।
यूँ प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी के प्रति असाधारण प्रीति से
यह नवपार्षद अध्यात्म की राह पर अग्रसर हुआ।
1961 में गुरुहरि योगीजी महाराज के वरद् हस्तों
गढडा में भागवती दीक्षा प्राप्त करके **'साधु उपेन्द्रदास'** नाम ग्रहण किया
और...
जीवन के अंतिम श्वास तक **'प्रगट के संबंध वालों की माहात्म्ययुक्त सेवा ही परमपद'** का मंत्र
आत्मसात् करके एक **आदर्श साधु** बने!

ऐसे 75 वर्षीय पू. कोठारीस्वामिजी की तबियत पिछले एक वर्ष से नासाज़ थी
और फेंफड़ों में पानी की मात्रा अधिक होने के कारण
19 नवंबर की सुबह वे भगवान स्वामिनारायण के चरणों में वे लीन हो गए।
1966 में प.पू. काकाजी एवं प.पू. पप्पाजी को संस्था ने विमुख करके
जिन 39 संतों को भी प.पू. काकाजी -प.पू. पप्पाजी के पक्षधर बता कर दूर किया,
उनमें से पू. कोठारी उपेन्द्रदासजी ने
गुणातीत के स्वामीसेवकभाव का मूर्तस्वरूप प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की निश्रा में रहते हुए,
सभी प्रगट स्वरूपों में **प.पू. काकाजी-प.पू. पप्पाजी** का संबंध निहारा
और...
जिन दो दिव्य विभूतियों के निमित्त संस्था से हम निकाले गए
व
जिन दिव्य बंधुजोड़ी की बदौलत–
आज हमारा यह अस्तित्व है–हम उजले हैं, समाज में आज हमारा परिचय बना हुआ है,
नींव की इन दो विभूतियों को आख़िरी सांस तक भूले बिना,
वे इन्हें आगे रख कर, दिल की सच्चाई से इनके होकर रहे-जीए
व
अपने आपको धन्य करके अक्षरधाम सिधारे।
वे कभी यह भी भूले नहीं थे कि प.पू. काकाजी ने हमें सांकरदा में मंदिर बनवा कर दिया था।
दिल्ली रहे, तब उनकी बातों में वे अक्सर इस बात का ज़िक्र करते।
धरोहर के रूप में गुणातीत समाज के लिए यह मुक्तात्मा गुणातीत के साधु की यूँ छाप छोड़ गई!
प.पू. गुरुजी के तो वे सखास्वरूप थे।
जैसे ही प.पू. गुरुजी को उनके अक्षरधाम सिधारने की खबर मिली,
तो तुरंत ही पू. सुहृद्स्वामी एवं पू. अभिषेक को साथ लेकर
वे देर रात को इंडिगो की फ्लाईट से अमदावाद पहुँचे और...
अगले दिन सुबह आठ बजे पू. कोठारीस्वामिजी के अंतिम दर्शन के लिए सांकरदा जाने निकल गए।
सांकरदा मंदिर के बाहर बगीचे में पालकी के अंदर पू. कोठारीस्वामिजी का पार्थिव शरीर रखा गया था।
प.पू. साहेबजी, प.पू. गुरुजी, पू. शास्त्रीस्वामिजी,
पू. दासस्वामिजी, पू. प्रेमस्वामिजी, पू. भरतभाई एवं पू. अश्विनभाई (पवई) सहित

उपस्थित संतों-मुक्तों ने पू. कोठारीस्वामिजी का पूजन-हार अर्पण किया।

तत्पश्चात् टॅम्पो द्वारा अग्निसंस्कार हेतु **'हरिधाम'** के लिए उन्हें विदा किया गया।

हरिधाम पहुँच कर पालकी में विराजमान कोठारी पू. उपेन्द्रस्वामिजी को मंदिर की प्रदक्षिणा करा के अग्निसंस्कार स्थल पर ले गए, जहाँ दोपहर करीब पौने बारह बजे उनकी अंत्येष्ठि हुई।

और...

सायं पौने पाँच बजे के करीब प.पू. गुरुजी

सोखड़ा से निकल कर वडोदरा-अस्पताल में हरिधाम के पू. कोठारीस्वामिजी से मिलते हुए

एयरपोर्ट पहुँचे और देर शाम की इंडिगो फ्लाईट से रात को दिल्ली लौटे...

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	2.12.'14,	मंगलवार	–	एकादशी – व्रत
(2)	दि.	16.12.'14,	मंगलवार	–	धनुर्मास प्रारंभ
(3)	दि.	18.12.'14,	गुरुवार	–	एकादशी – व्रत
(4)	**दि.**	**31.12.'14,**	**बुधवार**	**–**	**2015 – नए वर्ष के आगमन निमित्त 'ताड़देव' मंदिर में रात्रि 10:00 बजे 'मध्यरात्रि महापूजा'**
(5)	दि.	1.1.2015,	गुरुवार	–	2015 – नया साल प्रारंभ, एकादशी – व्रत
(6)	**दि.**	**5.1.'15,**	**सोमवार**	**–**	**पौषी पूर्णिमा, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का दीक्षा दिन**
(7)	दि.	13.1.'15,	मंगलवार	–	लोहड़ी
(8)	दि.	14.1.'15,	बुधवार	–	मकरसंक्रांति, धनुर्मास समाप्त, भिक्षा दिन
(9)	दि.	17.1.'15,	शनिवार	–	एकादशी – व्रत, ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज का अक्षरवास-मुंबई
(10)	दि.	24.1.'15,	शनिवार	–	वसंतपंचमी, शिक्षापत्री जयंती, **ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज का प्राकट्य दिन**
(11)	दि.	25.1.'15,	रविवार	–	**ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के स्मृति स्थल पर** ***सायं 6:30 बजे ताड़देव मंदिर में अखंड परिक्रमा का शुभारंभ...***
(12)	दि.	26.1.'15,	सोमवार	–	प्रजासत्ताक दिन **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के स्मृति स्थल पर** ***सायं 6:30 बजे अखंड परिक्रमा की पूर्णाहुति...***

R.N.I. 28971/ 77 ***(Air Mail)***

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**

'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052